रात्रि क्लास 15/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

रूहानी बच्चों को यह तो बाप ने समझाया है। जब सामने बैठे हो तो यह तो समझते हो यह बेहद बाप है। सभी आत्माओं का बाप है। सभी उनको फादर कहते हैं। सभी कहते हैं उनको याद करो। अंगुली ऊपर तरफ ही इशारा देते हैं कि गॉड ऊपर में रहता है। सभी जानते हैं बाप परमधाम में रहते हैं। वहाँ सभी आत्माएं रहती हैं। फिर सभी आते हैं पार्ट बजाने। 500करोड़ इस हार और जीत के खेल के एक्टर्स .... तो इस समय खास बाप को क्यों याद करना पड़ता है? क्योंकि आत्मा को पावन बनना है। तो जरूर परमात्मा को याद करना पड़े। अपन को आत्मा और बाप को बाप समझना पड़े। शिवबाबा है ना। उनको बुलाते हैं। हे! पतित–पावन आओ। तो यह गीता पाठशाला है और कोई को पाठशाला नहीं कहेंगे। बाप आते ही हैं राजयोग सिखाने। समझाते हैं बच्चे, पढ़ाई कमाई है। जितना जास्ती पढ़ो उतना कमाई जास्ती। भगवानुवाच हे! ..... तुमको राजाओं का राजा बनाऊँगा। एक होते हैं पवित्र राजाएं, दूसरे अपवित्र राजाएं। वह पतित राजाएं हैं ऊपर कलियुग में और पवित्र राजाएं होते हैं सतयुग, त्रेता में। इस समय है तमोप्रधान दुनियां। सतोप्रधान दुनियां को सतयुग कहा जाता है। सतयुग सुखधाम। कलियुग दुःखधाम। सुखधाम था। 84जन्म कैसे पट पड़ते हैं, फिर बाप सतोप्रधान बनने का रास्ता बताते हैं। टीचर से कृपा वा आशार्वाद नहीं लेंगे। (उ)नका काम ही है टीच करना। पढ़ने वाले अच्छी रीत पढ़कर अपने ऊपर कृपा आदि करते हैं। टीचर हूँ ना। (पढ़ेंगे) लिखेंगे होंगे नवाब..... बच्चे नापास होते ही तब हैं जब संगदोष में आ जाते हैं। यहाँ तो भगवान ... बनते हैं। पहले तो निश्चय होना चाहिए, परमपिता परमात्मा हमको राजयोग सिखाते हैं। तुम राजऋषि हो। (राजा)ई के लिए पढ़ते हो। तो सुखधाम का मालिक बनने के लिए पवित्र जरूर बनना है। प्यूरिटी है तो पीस, प्रास्पर्टी भी ... है। आत्माएँ मूलवतन में तो शान्त हैं, फिर सतयुग में भी शान्ति ही शान्ति है। प्यूरिटी, पीस, प्रास्पर्टी है। हाँ, आधा कल्प के लिए दुःख का नाम नहीं रहता है। यह पढ़ाई कंठ करनी है। कहाँ भी बैठे बुद्धि में यह .... रहे अब घर जाना है। वहाँ तो प्यूरिटी ही है। अभी अवस्था ऐसी चाहिए। बाबा पूछेंगे किसकी याद में (हैं)? सभी कहेंगे शिवबाबा की याद में। इसको कहा जाता है अव्यभिचारी याद और कोई को याद करने से पाप नहीं कटेंगे। एक को ही पतित–पावन कहा जाता है। यह पतित दुनिया है। एक भी पावन नहीं। सभी .... से ही पैदा होते हैं और फिर पवित्र होते तो गंगा स्नान करने क्यों जाते हैं? यह बाप तुमको समझ देते ... पानी कैसे पतित–पावन होगा। यह सभी रांग है। एक बाप ही राइट बात समझाते हैं। मूल बात है कि ... बाप है। हम आत्माएं बेहद के बाप के बच्चे हैं। कहते भी हैं हे परमपिता परमात्मा उसको ही याद करते .... और सभी है रचना। उनसे वर्सा नहीं मिल सकता। आधा कल्प रावण राज्य होता है। तुम जानते हो आधा (कल्प) हम पवित्र थे। सुखधाम था। सुखधाम से दुःखधाम, दुःखधाम से सुखधाम। यह चक्र फिरता ही रहता है। ..... बाप की कितनी इनसल्ट करते हैं। तब बाप कहते हैं भारत में कितनी ग्लानि की है। मुझे भी ... देते हैं। कृष्ण के लिए भी कह देते हैं इतनी रानियाँ थी। अभी तुम कितने पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। (तुम्)हारे कदम–कदम में पदम है। एमऑब्जेक्ट सामने है। सिर्फ बाप कहते हैं पवित्र बनना पड़ेगा, नहीं तो स्वर्ग में जा नहीं सकेंगे। स्वर्ग का 21जन्म का वर्सा मिलता है। तो एक जन्म पवित्र क्यों नहीं बनेंगे। पुरानी (दुनि)या का तो जरूर विनाश होगा। नई दुनिया में खानियां आदि सभी भरपूर होते हैं। अभी तुम स्वर्ग के मालिक (बनते) हो। बाप ही बाप, टीचर, सद्गुरू है। अभी कहते हैं मुझे याद करो तो पाप भस्म होंगे। दैवीगुण भी धारण करनी है। मीठा बनना है। किसको दुःख नहीं देना है। गाली आदि नहीं देनी है। देवताएं कितने प्यारे ... हैं। उनका दर्शन करने सभी जाते हैं। यहाँ तो मुख्य है पढ़ाई। उसमें नम्बरवन बात है पवित्रता की और मेहनत नहीं। और कुछ न समझे सिर्फ यह समझे, मैं आत्मा हूँ। बाप को याद करो, दैवीगुण धारण करो। कोई तकलीफ नहीं है। काम की चेष्टा पूरी न होने से अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।